'बटेंगे तो कटेंगे'

परिचयः– ''बटेंगें तो कटेंगें'' सीएम योगी यह ब्यान एक राजनीति के अलावा ओर कुछ नही। इस पर अखिलेश यादव ने कहा न बटेंगें और न कटेंगें। वर्तमान में चूंकि इलेक्सन का दौर है इसलिये ऐसे ब्यानबाजी होना स्वभाविक हैं। एसे ब्यानों को लेकर गम्भीर होना, व्यर्थ है। क्योकि ऐसी मानसिकता के लोग स्वार्थी होते हैं इनका आई क्यू लेवल बहुत कम पाया जाता है। ऐसे लोग मानसिक बिमारी से ग्रसित होते हैं लेकिन इनको लगता है कि हम जो कर रहे हैं वही सही है। इनका धर्म कहता है कि केवल अपना धर्म रहे बाकी चाहे भाड में जायें। जबकि एक अच्छा धर्म या मानवता यह कहती है कि यदि कोई धर्म किसी दूसरे धर्म के लोगों को मारकर, केवल अपने धर्म के लोगों को जीना सीखाता है तो वह वास्तव में धर्म नही हो सकता है ऐसे धर्म को आतंकवाद की श्रेणी में रखना कोई दो राय नही होगा।

धर्म का बीज –

शायद कुछ लोग भूल जाते हैं की इंसान ने धर्म को बनाया है न कि धर्म ने इंसान को। यहां गलती तब होती है जब लोग मानवता से उपर धर्म को समझते हैं और ऐसा इसलिये होता है क्योंकि अलग अलग धर्मो के गुरू लोगो के दिमाग में ''धर्म की अफीम'' बोते हैं। जिसके नशे में उसे लगता है कि यही वास्तविकता है। धर्मो के गुरू ऐसा इसलिये करते हैं क्योंकि उनकी दुकाने इसी धर्म की नफरत के धन्धे से चलती हैं।

हिन्दुओ का बटवांरा –

''बटेंगें तो कटेंगें'' का नारा देने वाले आज तक धर्म का निर्णय नही ले पाये, मुगल काल में इन्होने अपने आप को वैदिक धर्म, ब्रिटिश काल में आर्य धर्म, आजादी के समय हिन्दू धर्म और 2021 के बाद सनातन धर्म बोला है। कमाल की बात यह है कि अपने धर्म की किताबों में बाटने और तोडने वाले अब कहते नजर आ रहे है कि हिन्दुओ/सनातनीयो एक हो जाओं, इनका मजहब कहता है कि तुम कभी एक नही हो सकते। 6743 जातियों में तोडने वाले, बात बात में जाती की गालीयां देने वाले, जात पात को मानने वाले, जातियों के नाम पर हिंसा करने वाले, अब एक धर्म विशेष के खिलाफ लोगों को भडका कर ये कहते हैं कि हिन्दुओ/सनातनीयो एक हो जाओ।

कभी सोचा है –

कभी सोचा है कि इस प्रकार की मानसिकता वाले लोग हिन्दू राष्ट्र कि मांग क्यों करते हैं, नही तो आइये आपको समझाते हैं – क्योंकि हिन्दू धर्म में वर्ण व्यवस्था है और वर्ण व्यवस्था के अनुसार शूद्र को अधिकारों से वंचित किया गया है इसलिये हिन्दू राष्ट्र बनाने में शूद्र इनका साथ दे सके –

- ताकि आपको फिर से गुलाम बनाया जा सके।
- ताकि आपको फिर से धन/सम्पत्ति रखने से वंचित किया जा सके।
- ताकि आपको फिर से शिक्षा से वंचित किया जा सके।
- ताकि आपको फिर से रोजगार करने से रोका जा सके।
- ताकि आपको फिर से गोबरबा खाने पर मजबूर किया जा सके।
- ताकि आपको फिर से उपरोक्त तीनो वर्णो की सेवा करने के लिये मजबूर किया जा सके।
- ताकि आपको फिर से मंदिर में जाने से रोका जा सके।

- ताकि आपको फिर से घोडी पर चडने से रोका जा सके।
- ताकि आपको फिर से मुछे रखने पर पीटा जा सके।
- ताकि आपको फिर से सार्वजनिक स्थानो पर पानी पीने पर रोका जा सके।
- ताकि आपको फिर से जानवरो की तरह पीटा जा सके।
- ताकि आपकी बहु बेटियों के साथ शुद्धिकरण के नाम पर बालात्कार किया जा सके।
- ताकि फिर से एक लव्य का अगूँठा कटवाया जा सके।
- ताकि फिर से शम्बूक ऋषि की भॉति कोई राम गर्दन काट सके।
- ताकि फिर से आपके पूर्वजो को राक्षस, दानव, दैत्य आदि नामो से बुरा बनाया जा सके।

वास्तविक घटनाओ पर प्रश्न जो खडे होते हैं –

- केरल मंडया जिले कालाभैरवेश्रवर मंदिर में नवम्बर 2024 की घटना – मंडया जिले कालाभैरवेश्रवर मंदिर में दलितो के मंदिर में प्रवेश करने पर भगवान की मूर्ति को मंदिर उठाकर बाहर ले गये। एक होने का नारा देने वाले तब कहां चले जाते हैं जब एक जाति विशेष को अपने ही धर्म के मंदिर में जाने से रोका जाता है। (11 नवम्बर 2024 हिन्दुस्तान)
- राजस्थान घटना – जालोर जिले के सायला उपखण्ड क्षेत्र के गांव सुराणा, जब एक जाति विशेष के बच्चे द्वारा मटके से पानी पिने पर उसे इस तरह मारा जाता है की वह अस्पताल में दम तोड देता है एक होने का नारा देने वाले तब कहां चले जाते हैं । (13 अगस्त 2022 आजतक)
- उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी के मोरी क्षेत्र के सालरा गांव में एक दलित को मन्दिर में प्रवेश के कारण रात भर मन्दिर में बॉधकर जलती हुई लकडी से मारा पीटा गया, तब इनका हिन्दुत्ववाद/सनातनवाद कहॉ चला जाता है। (11 जनवरी 2023 अमर उजाला)
- मध्यप्रदेश के जिला नरसिंहपुर थाना गाडरवारा क्षेत्र में दलित को रूपए देने के बहाने घर से बाहर ले जा कर उसके साथ मारपीट की और उसे पेशाब पिलाई गई। तब इनका हिन्दुत्ववाद/सनातनवाद कहॉ चला जाता है। (06 अगस्त 2024 आजतक, नवभारत टाइम्स)
- मध्यप्रदेश के जुलाई 2023 को एक आदिवासी लडके को पेशाब पिलाने की घटना घटित हुई। नेता जी के वादे अधूरे! 'सीधी पेशाब कांड' पीड़ति का छलका दर्द, बोला– अब कोई को नहीं दिखता। (26 अक्टूबर 2023 नवभारत टाइम्स)
- उत्तराखण्ड में जिला नैनीताल के हल्द्वानी शहर में बिन्दुखत्ता क्षेत्र में एक दलित द्वारा अपने घर बनाने का प्रयास किया तो पडोसी ब्राहामण महिला द्वारा दलित पडोसी को जाति सूचक शब्दो का प्रयोग करते घर न बनाने की नसिहत देते हुए चेतावनी देते हुए कहा की

यहां का महौल खराब मत करो, तब इनका हिन्दुत्ववाद/सनातनवाद कहॉ चला जाता है। (18 अगस्त 2020 जनज्वार मीडिया)

- उत्तराखण्ड में जिला नैनीताल के ओखलाकांडा ब्लॉक के एक गांव में बने क्वारंटाइन सेंटर में दो युवको ने दलित महिला के हाथ का खाना खाने से इनकार कर दिया, तब इनका हिन्दुत्ववाद/सनातनवाद कहॉ चला जाता है। (19 मई 2020 न्यूज 18 व जागरण न्यूज)
- उत्तराखण्ड में जिला चम्पावत के सूखीढांग क्षेत्र में सवर्ण छात्रों ने दलित महिला के हाथो का खाना खाने से इन्कार कर दिया, तब इनका हिन्दुत्ववाद/सनातनवाद कहॉ चला जाता है। (24 दिसम्बर 2021 बीबीसी न्यूज)
- उत्तराखण्ड में जिला चमोली जोशीमठ के गांव सुभाई चांचडी क्षेत्र में धार्मिक आयोजन में ढोल न बजाने पर दलित परिवार पर 5000/– रू का जुर्माना व उनका हुक्का–पानी बन्द कर दिया, तब इनका हिन्दुत्ववाद/सनातनवाद कहॉ चला जाता है। (18 जुलाई 2024)
- उत्तर प्रदेश के जिला हाथरस में 14 सितम्बर 2020 को दलित लडकी के साथ हुई हैवानियत और हत्याकांड को चार साल बाद भी न्याय नही मिला परिवार का कहना है कि चार साल बाद भी हमें कैद जैसी जिंदगी बितानी पड रही है। (15 सितम्बर 2024 नवभारत टाइम्स)

''बटेंगें तो कटेंगें'' का नारा देने वाले ये बतायें कि उपरोक्त घटनाओं में विराधी/शोषणकर्त्ता कौन है? मुस्लिम, सिक्ख, ईसाइ, जैन, बुद्धिस्ट या कोई और ?

जाति के आधार पर कार्मो का बटवारा –

''बटेंगें तो कटेंगें'' यह एक धार्मिक जुमला है। शूद्रों को अपने पक्ष में एकत्रित करने का। हिन्दू धर्म के ठेकेदारों द्वारा सदियों से हमें बाँट रखा है। धर्म, वर्ण, जाति, गोत्र अर्थात मनुस्मृति–धर्मग्रन्थ द्वारा मानव को ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र छूत–अछूत में लगभग 6743 जातियों, लाखों गोत्रों में तो सदियों से बाँट रखा है। इस बटवारे में वर्ण और जाति के आधार पर हमारे कर्म को भी बाँट रखा है। जिसमें ब्राम्हण का कार्य पढ़ना–पढ़ाना पूजा–पाठ करना जगतगुरू, धर्मगुरु, राज गुरु, कुलगुरू, पंडित आदि धर्मसत्ता पर शत प्रतिशत अधिकार, क्षत्रिय का कार्य राजा बनना अर्थात राजसत्ता पर शत प्रतिशत अधिकार, वैश्य रोजी–रोजगार–व्यापार पर शत प्रतिशत अधिकार, शुद्र का कार्य तीनों वर्णों की सेवा करना। शुद्र में भी बटवारा छूत–अछूत का, छूत में पिछड़ा वर्ग अछूत में अनुसूचित जाति अनुसूचित जन जाति। अतः शुद्र में भी अछूत वर्ग के कुछ कार्य छूत की सेवा में करने पड़ते हैं।

बटोगे तो कटोगे को तर्क की कसौटी पर कसना चाहिए। अब विश्लेषण तो करना पड़ेगा –

"बटोगे तो कटोगे" की मुख्य आधार क्या है? मनुवादी विचारधारा मनुवादी विचारधारा का मुख्य स्तम्भ क्या है मनुवाद हिन्दू धर्म की वह आत्मा है जो सदियों से हमें मानसिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, और, व्यवहारिक तौर पर गुलाम बनाये रखने का संहिता है। मनुस्मृति सनातन धर्म का संविधान है मनुस्मृति की रचना किसने की? मनु ने, अर्थात मनु ने हमें शुद्र की श्रेणी में रखा।

- हमें नीच जात घोषित किया।
- हमें अपने बराबर बैठने नहीं देता।
- हमारा छुआ खाना नहीं खाया जाता यह किसने बनाया।
- हमें अपने कुएँ से पानी भरने नहीं देता।

धर्म ग्रंथ धर्म ग्रंथों में हमारे लिए क्या लिखा है?–

❖ रामचरित मानस में तुलसीदास ने हमारे लिए क्या लिखा–

शुद्र, गवार, ढोल, पशु, नारी, सकल तारना के अधिकारी।

अर्थात – ढोल, गवार, शुद्र, पशु आर नारी यह सब पीटने के पात्र हैं।

❖ तुलसीदास दुबे ने रामचरितमानस में लिखा है –

प्जहि विप्र सकल गुण हीना । शुद्र न पूजहु वेद प्रवीणा॥

अर्थात – ब्राह्मण चाहे कितना भी ज्ञान गुण से रहित हो, उसकी पूजा करनी ही चाहिए, और शूद्र चाहे कितना भी गुणी ज्ञानी हो, वो कभी पूजनीय नही हो सकता॥

❖ मानस उत्तरकांड100–5

ज बरणाधम तेली कुम्हारा स्वपच किरात कोल कलवारा।

अर्थात– तेली, कुम्हार, स्वपच, किरात, कोल, कलवार यह सब अधम और नीच होते हैं।

❖ मानस उत्तर कांड 130–

अभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अध रूप जे।

अर्थात – अहीर किरात यमन खस कोल यह सब पापी होते हैं।

❖ मानस अयोध्या काण्ड 194/3 में निषादराज से तुलसीदास कहलवाते है कि– लोक वेद सब भाँतिही नीचा जासु छाँह छुई लेइस सींचा।

अर्थात – जो निषाद लोक और वेद में सब तरह के नीच होते हैं और उनकी छाया के छू जाने मात्र से भी स्नान करना पड़ता है।

❖ मनु स्मृति में हमारे लिए क्या लिखा–'

- शूद्रों को धन रखने का अधिकार नहीं है।
- शूद्रों को शिक्षा पाने का अधिकार नहीं है।
- शूद्रों को सम्मान पाने का अधिकार नहीं दिया।
- शुद्र, पशु, पक्षी को अगर मार भी दो तो कोई पाप नहीं होता।

❖ गौतम धर्मसूत्र–2/3/4 में लिखा है कि–

यदि शुद्र किसी के पढ़ते हुए सुन ले तो उसके कानों में पिघला हुआ शीशा, रांगा, लाख डाल देना चाहिए।

यदि शुद्र वेदमंत्र का उच्चारण करे तो उसकी जीभ काट देनी चाहिए।

यदि शुद्र वेद मंत्र को याद कर ले तो उसका शरीर चिरवा देनी चाहिए।

इसका जवाब कौन देगा? –

- शम्बूक ऋषि की हत्या किसने की।

- एकलव्य का अंगूठा किसने काटा।
- मौर्य वंश के अन्तिम शासक बृहद्रथ मौर्य की हत्या किसने की ?
- हमारे बौद्ध विहारों, विश्वविद्यालयों, चौत्यों, शिलालेखों, बौद्ध धर्मग्रंथों को किसने तोड़ा, जलाया।
- 'बौद्ध भिक्षुओं, मौर्यों का नरसंहार किसने किया–?
- 'हमें छूत अछूत किसने बनाया?
- गोबरबा खाने को किसने मजबूर किया?
- सती प्रथा में नारी को आग में कौन जलवाया?
- नारी शुद्धिकरण प्रथा में शादी के बाद समस्त शुद्र जाति के दुल्हनों को तीन दिन तक अपने घर ले जा कर बलात्कार करना, किसने किया।'
- दास–दासी प्रथा में सामाजिक, आर्थिक शोषण कौन करता था?
- हम शासक कौम के थे हमें शोषित किसने बनाया?
- विश्वगुरु तथागत गौतम बुद्ध को बुद्धू किसने बनाया?
- बाबा साहब का अपमान किसने किया?
- संत रविदास की हत्या किसने की?
- आज भी हमारे आरक्षण का विरोध कौन करता है–?
- हमें चरणामृत प्रथा में अपना पैर धुलवाकर पिलाना किसने किया–?
  बटोगे तो कटोगे की विचारधारा वाले लोंगों ने ।

इसका जवाब कौन देगा? –

हमारे घर के भोज में ब्राम्हण पक्की रसद (पूड़ी, सब्जी, खीर, दही, मीठा) खाता है।' पर अपने घर भोज में हमे कच्ची रसद (दाल– चावल) खिलाया यह किसने किया–? बटोगे तो कटोगे की विचारधारा वाले लोगो ने।

क्षत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक के समय ब्राम्हणों के सबसे नीच ब्राम्हण ने दाहिने पैर के अंगूठे से राजतिलक किया क्योंकि वह शुद्र थे यह घृणित कार्य किसने किया?

आज भी हम अपने ही घरभोज (शादी, विवाह, पूजा, पाठ, आदि) में ब्राम्हण से पहले खाना नही खा सकते।

आज भी हम शादी–विवाह, गृह–प्रवेश बिना ब्राम्हण से पूछे कर नहीं सकते।

आज भी हम अपने घर तेरहवीं (मृत्यु भोज में) भोजन पहले भगवान खाएंगे फिर ब्राम्हण खाएंगे फिर कुत्ता, गाय, बैल खायेगा फिर हम खाएंगे अर्थात हमारी औकात कुत्ता से भी बदतर है।

यह परम्परा किसने थोपी? –

- आज भी हमें, हमारे बाप–दादा को हमारे से बहुत छोटा उम्र का ब्राम्हण कभी भी नमस्कार नहीं करता क्यों? यह परम्परा किसने कायम रखी?
- लैटरल इन्ट्री के नाम पर सैकड़ों आई.ए.एस, सेकेट्री वाले पोस्टों पर बटोगे तो कटोगे वाले लोंगों ने कब्जा किया है।
- सेना में 90 प्रतिशत युवा शुद्र समाज के होते हैं उन्हें 4 साल की सेवा कर देना और उसे 20–25 साल तक कि नौकरी और पेंशन से वंचित करना यह काम किसने किया?
- उत्तर प्रदेश के शिक्षित घोटाले में शूद्रों के हजारों पदों पर घोटाला किया।
- यू.पी.एस.सी. की परीक्षा में शूद्रों के पदों के साथ घोटाला किया।
- आज देश के सभी संस्थाओं में किसका कब्जा है?
- सदियों से हमें धर्म के नाम पर भ्रम भय पाखंड के द्वारा हमारा शोषण, अपमान किया।
- हमे जिल्लत की जिंदगी जीने पर मजबूर किया।
- हमें मल साफ करने पर मजबूर किया।
- हमें चमड़ा छिलने पर मजबूर किया।
- हमे सब्जी–बैगन बोने पर मजबूर किया।
- हमे पशु चराने पर मजबूर किया।
- हमें पल पल हर जगह जिल्लत की जिंदगी जीने पर मजबूर किसने किया?
- 'बटोगे तो कटोगे वाले लोंगों ने'।
- हिन्दू धर्म/सनातन धर्म में धर्मगुरु सिर्फ ब्राम्हण ही बन सकता है, मगर शुद्र क्यों नही?

बहुजन महापुरुषों का डर –

इन्होंने हमारे बहुजन महापुरुषों– विश्वगुरु तथागत गौतम 'बुद्ध, सम्राट अशोक, संत रविदास, महात्मा फुले, छत्रपति साहूजी महाराज, बाबा साहब भीमराव अंबेडकर, संत गाडगे, विरसा मुंडा, अमर शहीद जगदेव प्रसाद, रामस्वरूप वर्मा, रामस्वामी नायकर पेरियार, ललई सिंह यादव, मान्यवर कांशीराम के विचारों को नास्ताबूत किया है। जिन्होंने सभी शूद्रों महिलाओं के सम्मान, स्वाभिमान, समता, समानता, मानवता के लिए संघर्ष किया और शाहिद हुए।

आज हम इनके विचारधारा से एक होने लगे तो इन्हें परेशानी होने लगी। इनका वोट प्रतिशत गिरने लगा।

इनकी लोकसभा में सीटे कम होने लगीं। ये अयोध्या हार गए ये बद्रीनाथ हार गए तब ये नारा निकला बटोगे तो कटोगे।

'ये नहीं चाहते –

- 'ये नहीं चाहते कि मुलायम सिंह यादव, शरद यादव, मान्यवर कांशीराम की विचारधारा जिन्दा रहे। यह नहीं चाहते कि बहुजनवादी, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष विचाधारा के लोग बहन मायावती, लालू यादव, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, बाबू सिंह कुशवाहा, स्टॅलिन आदि बहुजन विचारधारा के लोग राजसत्ता पर काबिज हों।
- ये नहीं चाहते कि हमारे बच्चे पढ़े–लिखें और आगे बढ़े। फिर इनकी साजिश प्रारम्भ होती है कहीं पर निगाहें कहीं पर निशाना।
- ये निशाना लगाते हैं मुसलमान पर और मौत होती है शूद्रों, बहुजनों की 'आज भी यही लोग जो यह कह रहे हैं कि बटोगे तो कटोगे वही लोग।
- हमें, हमारे, परिवार, समाज को नीच, अशिक्षित, गुलाम, तिरस्कृत, बहिस्कृरित, अछूत, 'बनाये रखे हैं? वही जो आज कहते हैं कि बटोगे तो कटोगे।

य वही लोग हैं –

❖ ये वही लोग हैं जो भारत के प्रथम राष्ट्रपति मा. राजेन्द्र प्रसाद जी को राष्ट्रपति बनने के बाद काशी के पंडितों नें अपना पैर धुलवाया था।

- ❖ ये वही लोग हैं जो जगजीवन राम द्वारा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणासी में पंडित गोबिन्द बल्लभ पन्त की मूर्ति के अनावरण के बाद उसे गंगा जल से धुलवाया था। क्योंकि एक अछूत ने अनावरण किया है।
- ❖ ये वही लोग हैं जो उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मा. अखिलेश यादव जी के द्वारा अपना मुख्यमंत्री निवास खाली के बाद मुख्यमंत्री योगी जी ने उसे गंगाजल से धुलवाया था। क्योंकि उसमें शुद्र रहता था।
- ❖ ये वही लोग हैं जो भारत के पूर्व राष्ट्रपति मा. रामनाथ कोविंद जी को पुष्कर मंदिर के बाहर सीढ़ियों पर ही पूजा अर्चना करवाये थे क्यों कि वे शुद्र थे।
- ❖ ये वही लोग हैं जो नए संसद भवन के उद्घाटन में मा. राष्ट्रपति मुर्मू जी को नहीं बुलवाये थे क्योंकि वह अछूत थीं। ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिलेंगें।

इनकी गिरी हुयी सोच –

आज पुनः बटोगे तो कटोगे की विचारधारा वाले लोग संविधान बदलना चाहते हैं। हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते हैं क्यों? हिन्दू राष्ट्र बनेगा तो पुनः मनुस्मृति के द्वारा। मनु का संविधान लागू होगा मनु स्मृति लागू होगी तो शुद्र न तो पी एम बनेगा, न सी एम बनेगा, न मंत्री बनेगा, न डी.एम. बनेगा, न डॉक्टर बनेगा, न इंजीनियर बनेगा, न शिक्षक बनेगा, न प्रोफेसर बनेगा, न–??? फिर न धर्म सत्ता न राज सत्ता न धन सत्ता न नौकरशाही (प्रशासन–नौकरी) आपके पास होगी।

अतः बार बार मनुस्मृति, भृगुसंहिता, गौतमधर्मसूत्र, रामचरित मानस आदि धर्मग्रंथों का विधिवत तार्किक तौर पर अध्ययन करें और बौद्ध धम्म, भारत का संविधान, जाति का विनाश, गुलामगिरी, बालू की रेत पर खड़ा हिंदू धर्म जैसी किताबों का भी अध्धयन करें तथा बहुजन महापुरुषों, विद्वानों के किताबों का भी अध्ययन कर लें। साजिश को जानें उनसे सतर्क रहें, जागते रहें, जगाते रहें लोंगों को बताते रहें।

तय आपको करना है कि शेर बने या बाज बने, आने वाली पीढ़ी गुलाम बने, मजबूर बने, मजदूर बने, जिल्लत की जिंदगी जिये।

संदर्भ सूची **(Bibliography) -**

- बुक्स
- इंटरनेट
- सोसल मीडिया

(कपिल बौद्ध)